

चतुर्था अव्यय. (तत्.) चार विधियों या प्रकार से चतुर्विधा 2. चार खंडों में।

चतुर्थाम पुं. (तत्.) चारों धाम, चार मुख्य तीर्थ (बद्रीनाथ, द्वारकापुरी, जगन्नाथ पुरी तथा रामेश्वर)।

चतुर्बीज पुं. (तत्.) कालाजीरा, अजवाइन, मेंथी तथा चंसुर (हालिम)- इन चारों के बीजों का समूह।

चतुर्भाज वि. (तत्.) 1. प्रजा द्वारा पैदा किए गए अन्न आदि में से राजा द्वारा कर स्वरूप लिया गया एक चौथाई 1/4 अंश पुं. (तत्.) चौथे भाग का अधिकारी राजा।

चतुर्भुज पुं. (तत्.) 1. विष्णु 2. चार भुजाओं और चार कोणों वाला क्षेत्र।

चतुर्भुजा स्त्री. (तत्.) 1. एक विशिष्ट देवी 2. गाय की रूप धारिणी महाशक्ति।

चतुर्भुजी पुं. (तत्.) 1. एक वैष्णव संप्रदाय जिसके आचार-विचार एवं व्यवहार आदि रामानंदियों से मिलते हैं 2. इस संप्रदाय (चतुर्भुजी) का अनुयायी वि. (तत्.) 1. चार भुजाओं वाला 2. चतुर्भुजी मूर्ति या प्रतिमा।

चतुर्मास पुं. (तत्.) वर्षाकाल के चार मास (महिने) सावन, भादों, क्वार और कार्तिक का चौमासा (आषाढ़ की पूर्णिमा से कार्तिक मास के अंत तक)।

चतुर्मुख पुं. (तत्.) 1. एक प्रकार का चौताला ताल जिसमें क्रम से एक लघु, एक गुरु, एक लघु और एक प्लुत मात्रा होती है 2. नृत्य में एक प्रकार की चेष्टा 3. विष्णु वि. (तत्.) चार मुखों वाला अव्यय. चारों ओर।

चतुर्मेध पुं. (तत्.) चारों मेध का बलिदान (अश्वमेध, पुरुषमेध, सर्पमेध तथा पितृमेध) करने वाला।

चतुर्युगी स्त्री. (तत्.) 1. चौयुगी, चार युगों का समय, (कृतयुग (सतयुग), त्रेता, द्वापर और कलियुग) 2. चौकड़ी।

चतुर्वर्ग पुं. (तत्.) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, चारों का समाहार।

चतुर्वर्ण पुं. (तत्.) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र विषयक चारों वर्णों का समाहार।

चतुर्वाही पुं. (तत्.) 1. चौकड़ी 2. चार घोड़ों की गाड़ी।

चतुर्विंश वि. (तत्.) चौबीसवाँ।

चतुर्विद्या स्त्री. (तत्.) चारों वेदों की विद्या (ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद और सामवेद, चारों का ज्ञान)।

चतुर्विध क्रि.वि. अव्य. (तत्.) चार रूपों में, चारों प्रकार से।

चतुर्वेद पुं. (तत्.) 1. परमेश्वर (ईश्वर) 2. चारों वेद वि. (तत्.) चारों वेदों का ज्ञाता/जानने वाला।

चतुर्वेदी पुं. (तत्.) 1. चारों वेदों का ज्ञाता (जानकर) 2. ब्राह्मणों की एक उपजाति।

चतुर्व्यूह पुं. (तत्.) 1. चार मनुष्यों या पदार्थों का समूह जैसे- राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न चार भाई 2. संसार, संसार का हेतु, मोक्ष, मोक्ष का उपाय 3. वैष्णव दर्शन में वासुदेव, संकर्षण (बलराम) प्रद्युम्न और अनिरुद्धा 4. (योगदर्शन में) हेय, हेय हेतु, हान और हानोपाय 5. आयुर्वेद (चिकित्सा शास्त्र) में रोग, रोग-निदान हान (आरोग्य) और हानोपाय (भैषज्यमिति) 1. चारों का समुच्चय 2. विष्णु 3. योगशास्त्र 4. आयुर्वेद शास्त्र।

चतुर्होता पुं. (तत्.) वेद में वर्णित अथवा वेद सम्मत चारों होम करने वाला।

चतुल पुं. (तत्.) 1. स्थापक (स्थापना करने वाला)।

चतुष्क वि. (तत्.) 1. जिसके चार पहलू या पार्श्व हो, चौपहला 2. चार कोनों वाला 3. चार वाद्यों तथा गायकों का पुं. (तत्.) 1. चौराहा 2. चार का समुच्चय या समूह 3. चार अंगों वाला व्यक्ति 4. चार कोनों वाला प्रांगण या घर 5. एक प्रकार का घर 6. एक प्रकार की छड़ी या डंडा।